छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)

सूचना विवरणिका

दीनदयाल शोध केन्द्र

भारतीय वैदिक ज्ञान परम्परा की अमूल्य निधि वेद–वेदांग उपनिषद् पुराणादि की अविरल निर्मल धारा जो अक्षुण्ण है, इस ज्ञान गंगा की एक धारा छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के दीनदयाल शोध केन्द्र से मा. कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक जी के संरक्षण में तथा दीनदयाल शोध केन्द्र के निदेशक एवं विश्वविद्यालय के मा. प्रतिकुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी जी के मार्गदर्शन में प्रवाहित हो रही है। वेद के दो भाग ऋषियों ने बताये हैं। जिसमें ज्ञान–काण्ड तथा कर्मकाण्ड। कर्मकाण्ड में याज्ञिक विधान, संस्कार, तथा जीवन के नित्य नैमित्ति कर्म, तर्पण, श्राद्ध आदि का ज्ञान कराना तथा इसको व्यवहार में किस प्रकार लाकर जीवन को सफल किया जाये तथा जीवन को परिमार्जित कर आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त किया जा सके।

वैदिक ज्ञान गंगा में शास्त्र का अवगाहन करने के लिए जीवन संयमित होना चाहिये। जीवन संयमित होने के लिए कर्मकाण्ड अनिवार्य है। जीवन को दिशा देने के लिए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इन ज्ञान परम्परा से समाज, देश का उत्थान होगा तथा समाज सुसंस्कृत होगा। भारतीय ज्ञान की ध्वजा सकल विश्व में समुन्नत हो फहराए यही मंगल उद्देश्य है।

दीनदयाल शोध केन्द्र के अन्तर्गत प्राच्य विद्या, संस्कृत शास्त्र की अमूल्य निधि समेटे हुए शास्त्रों का अध्ययन–अध्यापन होता है। जिसमें प्रमुख पाठ्यक्रम निम्न हैं –

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	सीट	योग्यता	फीस (एक वर्ष)
1	एम.ए. ज्योर्तिविज्ञान	2 वर्ष	50	स्नातक	10,200/–
2	डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड	1 वर्ष	50	इण्टरमीडिएट	9,200/–
3	पी.जी. डिप्लोमा इन वास्तुशास्त्र	1 वर्ष	30	स्नातक	11,200/–

ज्योतिर्विज्ञान (ज्योतिषामयनम चक्षुः)

वैदिक ज्ञान ज्ञान में षडंगवेद अर्थात् वेद और वेदों के छः अंग के साथ अध्ययन करने की परम्परा रही है। वेद को जानने समझने के लिए वेदांगों का अध्ययन आवश्यक है। ज्योतिष शास्त्र वेद पुरूष के नेत्र हैं। इनमें भूत, वर्तमान, भविष्य को देखा जा सकता है।

कर्मकाण्ड (तत्सद)

वेदों में प्रधानतः तीन विषयों, कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड, उपासना काण्ड का प्रतिपादन है। यज्ञ–यामादि, यथेष्ठ फलप्राप्ति, लोक हितकारी दृष्ट फल सभी कर्मों का समावेश कर्मकाण्ड के अन्तर्गत आता है। कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञकर्म वह है जिससे यजमान को इहलोक में अभीष्ट फल की प्राप्ति हो। धर्मसूत्र एवं स्मृतियाँ जीवन के प्रत्येक पक्ष में विधि–निषेद्ध का उपदेश करती है तथा कर्मकाण्ड से नित्य, नैमित्तिक, काम्यकर्मो को उपस्थापित करते है।

वास्तु शास्त्र (यत पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे)

भारतीय प्राचीन ज्ञान वास्तु के क्षेत्र में अद्भुत रहा है। पुरातन से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व समान रहा है। वास्तु कला, भूगोल, खगोलशास्त्र और तत्वों के संतुलन पर आधारित है। जिस प्रकार मानव शरीर में पांच तत्वों का सन्तुलन है । उसी प्रकार वास्तु शास्त्र वास्तुशास्त्र गृह, भवन, प्रतिष्ठान, द्वार में सन्तुलन होने का उपदेश करता है। सभी तत्वों की दिशा, स्थान, आदि का महत्व है। इससे ऊर्जा का संचार होता है और जीवन सुगम, सरल, तथा उत्कर्ष को प्राप्त करता है।

संपर्क सूत्र

डा. श्रवण कुमार द्विवेदी, कर्मकाण्ड (9959242886)

श्री स्वयं प्रकाश अवस्थी, ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र (8090321616)

श्री संगम बाजपेयी, प्रवेश समन्वयक (8887878840)

डा.दिवाकर अवस्थी, सहायक निदेशक (9454690290)

Email ID- ddsk@csjmu.ac.in

दीन दयाल शोध केंद्र से संबंधित जानकारी के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

दीन दयाल शोध केंद्र में संचालित किसी भी पाठयक्रम में प्रवेश लेने हेतु रजिस्टर करने के लिए क्यू आर कोड को स्कैन करें

प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी
निदेशक/प्रतिकुलपति

डा. दिवाकर अवस्थी
सहायक निदेशक

डा.श्रवण कुमार द्विवेदी

श्री स्वयंप्रकाश अवस्थी

श्री संगम बाजपेयी